उपनिषद् आज भी प्रासङ्गिक हैं —

UMA [illegible] OF SANSKRIT, R.N. College, Hajipur.

जिन दिनों विश्व की सभ्यता और संस्कृति तमस् के गर्त
में सो रही थी, उन दिनों भारत में पूर्ण सभ्यता का उदय हो चुका
था। ऋषि-मुनियों ने आत्मचिन्तन एवं मनन से परम तत्व का
साक्षात्कार कर शिष्यों को उपदेश देना शुरू कर दिया था।
देववाणी के रूप में पूर्ण भाषा का विकास प्राप्त था। वेद हमारे ज्ञान के
साधन और उपनिषद् उनका साररूप विज्ञान हमारी अनन्त निधि हैं।

इस समय चारों ओर अनेक राजनीतिक और आर्थिक वादों का ऐसा
भयंकर जाल फैल गया है जिसके कारण जिन महान दार्शनिक वादों ने
हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को चिन्तनशील एवं विचारशील बनाकर
आध्यात्मिक उत्कृष्टता की ओर प्रवृत्त कर रखा था, उसकी चर्चा बंद सी
हो गई है, इसी के परिणामस्वरूप आज चारों ओर राग-द्वेष और हिंसा-
प्रतिहिंसा का प्रबल प्रवाह बढ़ रहा है एवं समाज की भयानक दुर्दशा हमारे
सभी सामने प्रत्यक्ष हो रही है।

आधुनिक युग में इंग्लिश स्कूलों का प्रचलन तेजी से बढ़
रहा है, हमारी यह देवभाषा बहुत पहले भारतीय घरों से निकलकर
विदेशी विद्यालयों में फलने-फूलने लगी है। अपनी इस देवभाषा की
जानकारी लेना तो दूर, हम उसकी समृद्ध धरोहर को खोलकर देखना
भी नहीं चाहते हैं। दूसरे उससे लाभान्वित हो रहे हैं और हम
उससे दूर भागने में ही अपनी गरिमा समझ रहे हैं।
पूर्व की दौड़ पाश्चात्यता की होड़ में लगी है एवं
पाश्चात्य जगत भौतिकता से ऊबकर इसके वार्धक्य में आनन्द
पाने लगा है।

वेद के अन्तिम भाग उपनिषद् पूर्णतया विज्ञान हैं और
उनका विश्लेषण आज के बड़े-बड़े अनुसंधानों का आधार है।
'उपनिषद्' से हमारा तात्पर्य 'पुस्तक' नहीं है। उपनिषद्
वस्तुतः ज्ञान साधन हैं। यह विद्या है, जिसमें जीवन की शाश्वत मान्यताओं
के प्रति अपने ढंग से विचार किया गया है।
'उपनिषद्' = उप + नि (उपसर्गपूर्वक) +
√सद् (धातु) + क्विप् प्रत्यय से बनता है। अर्थात् वह विद्या
जिसके द्वारा मुमुक्षु साधक गुरु के समीप बैठकर आत्मतत्व का
साक्षात्कार करता है। इस अर्थ में सामान्य रूप से इसे आत्मविद्या,
मोक्ष विद्या और ब्रह्मविद्या भी कहा जाता है। यह इनके दार्शनिक पक्ष
की अभिव्यक्ति है, यह एक गंभीर विषय है जो आम व्यक्ति
के लिए ग्राह्य नहीं है। यह जीवन की सभी दिशाओं में प्रकाश देने-
वाली अखण्ड परम ज्योति है। इसकी महिमा इसलिए नहीं है कि
दाराशिकोह ने इनसे प्रवाह प्राप्त किया था, या शोपेनहर, मैक्समूलर
एवं अन्यान्य पाश्चात्य विद्वानों ने इनकी प्रशंसा की है। यह

Scanned with CamScanner